प्रायद्वीपीय भारत
(Peninsular India)

- भारत का सबसे बड़ा भौतिक प्रदेश है, जो कुल क्षेत्रफल का लगभग आधा है (16 लाख km^2)
- भारत का प्राचीनतम भौतिक प्रदेश है, जो कि गौंडवानालैंड का अवशेष है।
- इसकी आकृति त्रिभुजाकार व मेजाकार है।
- औसत ऊँचाई 600-900 मी. है तथा इसका सामान्य ढ़ाल पश्चिम से पूर्व की ओर है।

प्रायद्वीपीय भारत

1. मध्यवर्ती उच्च भूमि
2. दक्कन का पठार
3. मेघालय व कर्बी एनलोंग का पठार
   - प्रायद्वीपीय पठार का हिस्सा है ना कि हिमालय का।

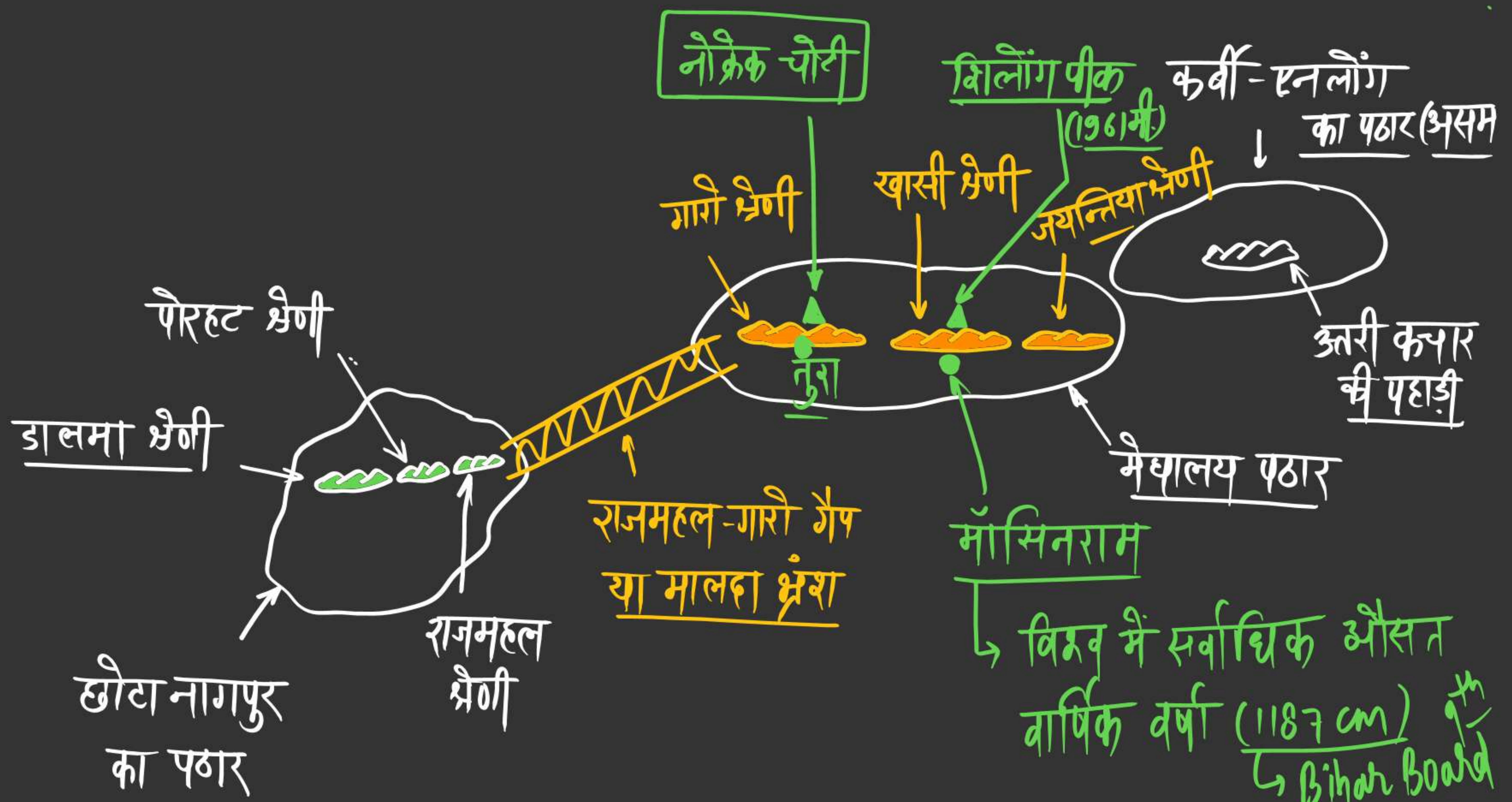

नोक्रेक चोटी
शिलोंग पीक (1961मी.)
कर्बी-एन्लोंग का पठार (असम)
गारो श्रेणी
खासी श्रेणी
जयन्तिया श्रेणी
पोरहट श्रेणी
डालमा श्रेणी
तुरा
उत्तरी कचार की पहाड़ी
मेघालय पठार
राजमहल-गारो गैप या मालदा भ्रंश
मॉसिनराम
विश्व में सर्वाधिक औसत वार्षिक वर्षा (1187 cm)
9th
Bihar Board
छोटा नागपुर का पठार
राजमहल श्रेणी

⇒ शिलोंग पीक मेघालय की सर्वोच्च चोटी है।

⇒ जितनी वर्षा तुरा स्थान पर एक दिन में होती है उतनी राज॰ के 10 वर्षों में होती है।

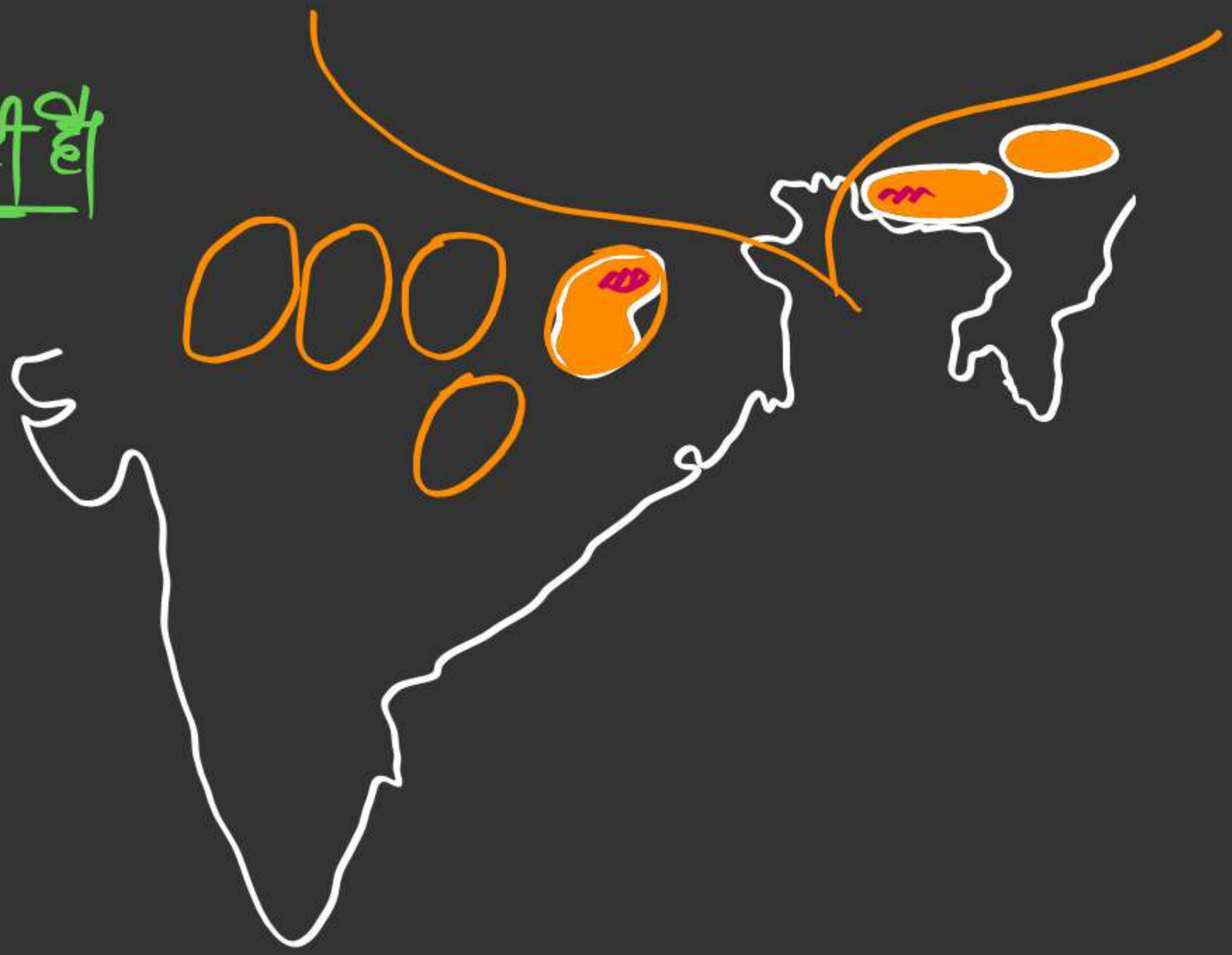

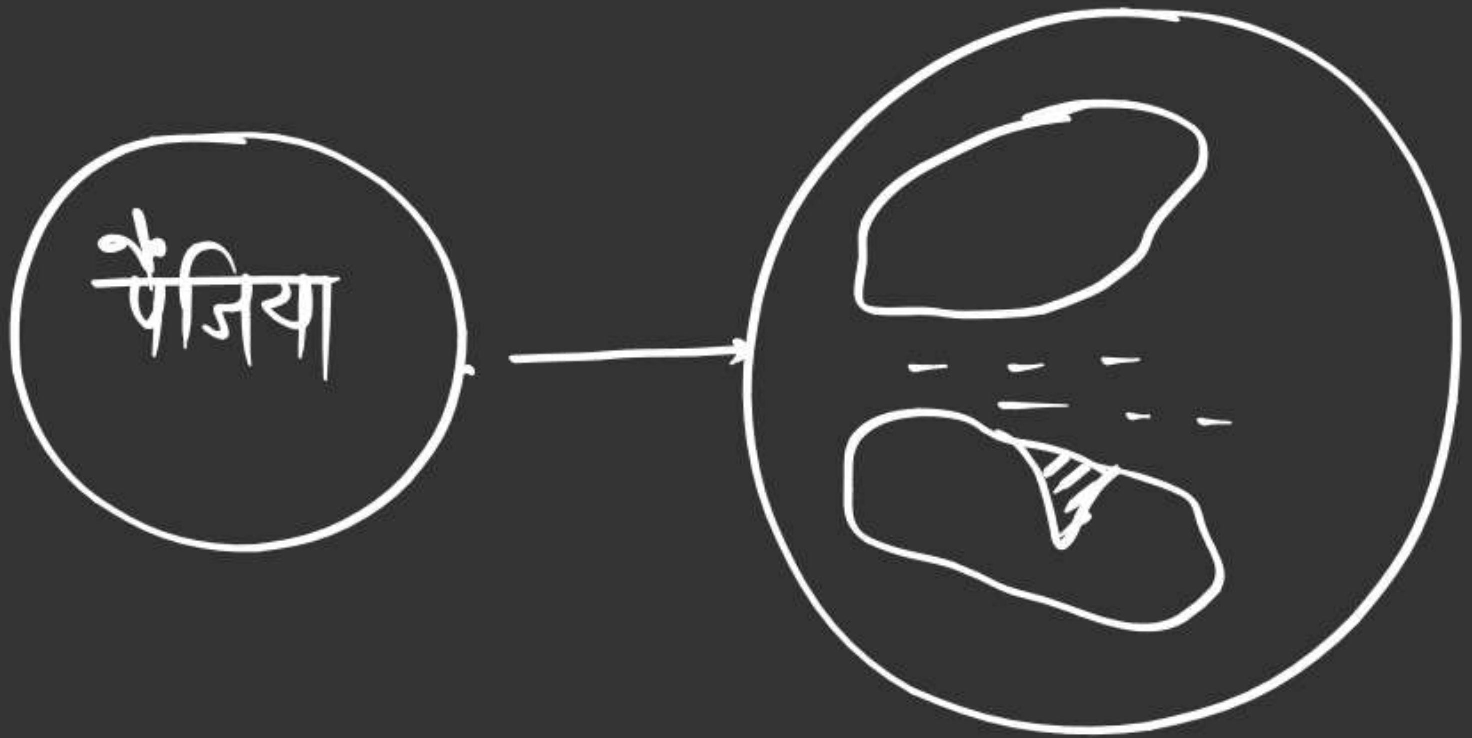
पैंजिया

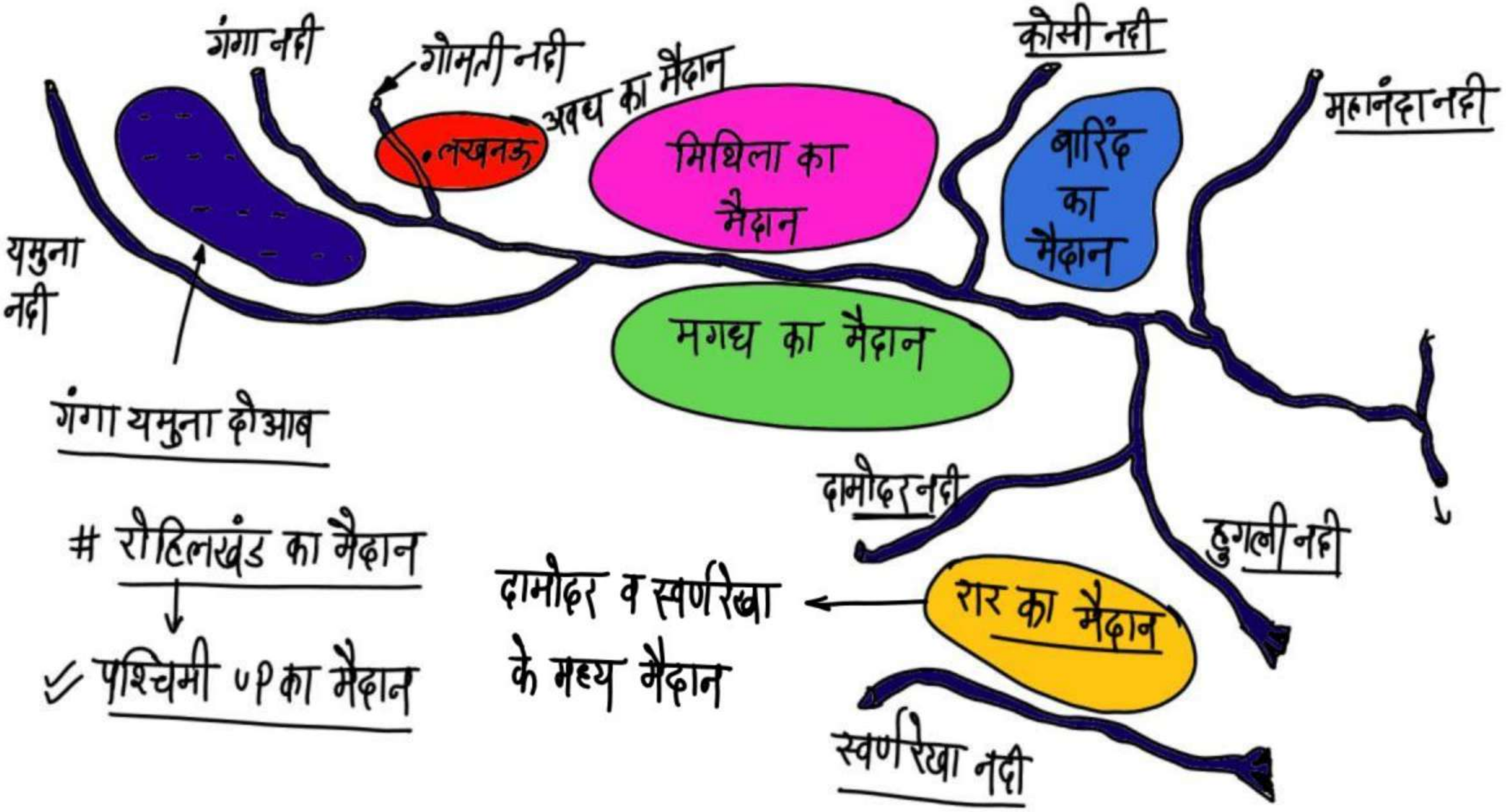
गंगा नदी
गोमती नदी
अवध का मैदान
लखनऊ
मिथिला का मैदान
कोसी नदी
बारिंद का मैदान
महानंदा नदी
यमुना नदी
मगध का मैदान
गंगा यमुना दोआब
दामोदर नदी
हुगली नदी
रोहिलखंड का मैदान
पश्चिमी UP का मैदान
दामोदर व स्वर्णरेखा के मध्य मैदान
रार का मैदान
स्वर्णरेखा नदी

हिमालय 5 लाख Km^2 व उत्तरी मैदान लगभग 7 लाख Km^2 क्षेत्रफल पर विस्तृत है।

प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेश

- सम्पूर्ण भारत का सबसे बड़ा भौतिक प्रदेश है, जो कुल क्षेत्रफल का लगभग आधा है।
- सबसे प्राचीन भौतिक प्रदेश है।
- गौंडवानालैंड का अवशेष है।
- शील्ड उदाहरण है। (शील्ड - प्राचीनतम लावा पठार)
- औसत ऊंचाई 600-900 मी.
- आकृति - त्रिभुजाकार या मेजाकार

प्रायद्वीपीय भारत

1. <u>मध्यवर्ती उच्च भूमि</u>
2. दक्कन का पठार
3. कर्बी-एनलोंग का पठार

① मध्यवर्ती उच्च भूमि :-

↓

औसत ऊंचाई 700 से 1000 मी.

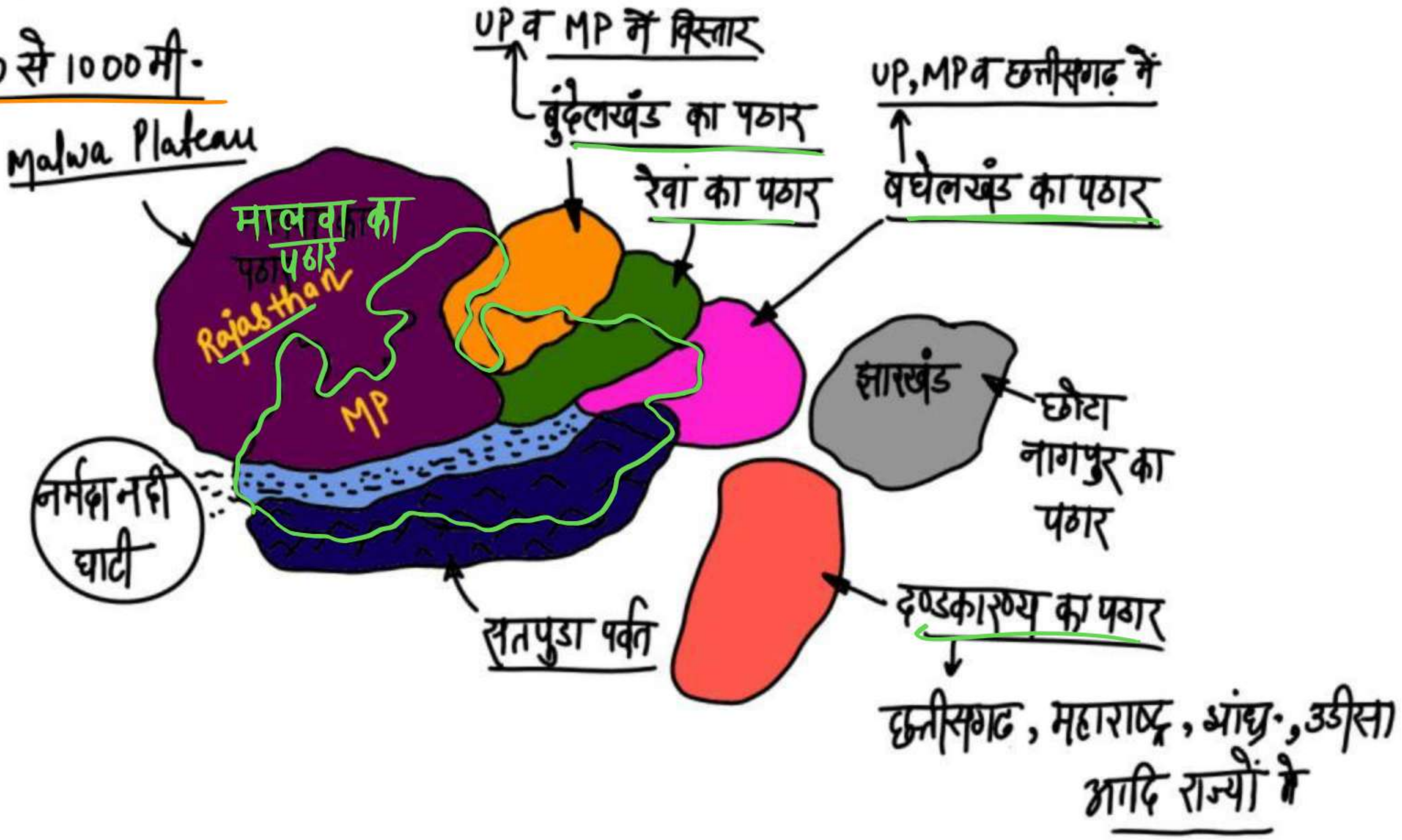

मालवा का पठार :- Rajasthan व MP में विस्तृत है, जिसका निर्माण क्रिटेशियस काल में लावा जमाव से हुआ है।

- इसे राज॰ में हाड़ौती पठार कहा जाता है।
- यहां लावा चट्टानों के अपक्षयित (weathering) होने से काली मृदा का विकास हुआ है।
- इस पठार उज्जैन (महाकाल नगरी), भोपाल (झीलों की नगरी), इंदौर (मिनी मुंबई) व सांची नगर अवस्थित है।
  - सांची → स्तूपों की नगरी ✓

↳ इस पठार से चंबल, क्षिप्रा, कालीसिंध, पार्वती नदियां प्रवाहित होती हैं।

② बुंदेलखंड का पठार :- UP व MP में विस्तृत है (UP व MP के 7-7 जिलों में)

- यह प्राचीन ग्रेनाइट, नीस चट्टानों से निर्मित पठार है जिसके अपरदन व अपक्षयित होने के कारण लाल-पीली मिट्टी का विकास हुआ है।
- यहां से बेतवा व केन नदियां प्रवाहित होती हैं।
- यहां अर्द्धशुष्क जलवायवीय दशाओं का विकास हुआ है।

③ बघेलखंड का पठार :- MP व छत्तीसगढ़ में

→ कैमूर पहाड़ियों के पूर्व में स्थित है, जो कि सौन व महानदी अपवाह तंत्र को पृथक करता है।

(4) दण्डकारण्य का पठार :- विस्तार मुख्य रूप से छत्तीसगढ़, उड़ीसा में मिलता है।
(महाराष्ट्र, झारखंड में भी है)

→ इसे छत्तीसगढ़ में बस्तर तथा उड़ीसा में कालाहांडी पठार कहा जाता है।
- बस्तर ↓ टिन के लिए प्रसिद्ध
- कालाहांडी पठार ↓ बॉक्साइट भंडारों के लिए प्रसिद्ध

→ यहां प्रवाहित मुख्य नदी इंद्रावती है। → चित्रकोट जलप्रपात

→ इस पठारी भाग में स्थित डल्लीराजहरा की खान (छत्ती.) लौह अयस्क भंडारों (*) हेतु प्रसिद्ध है।

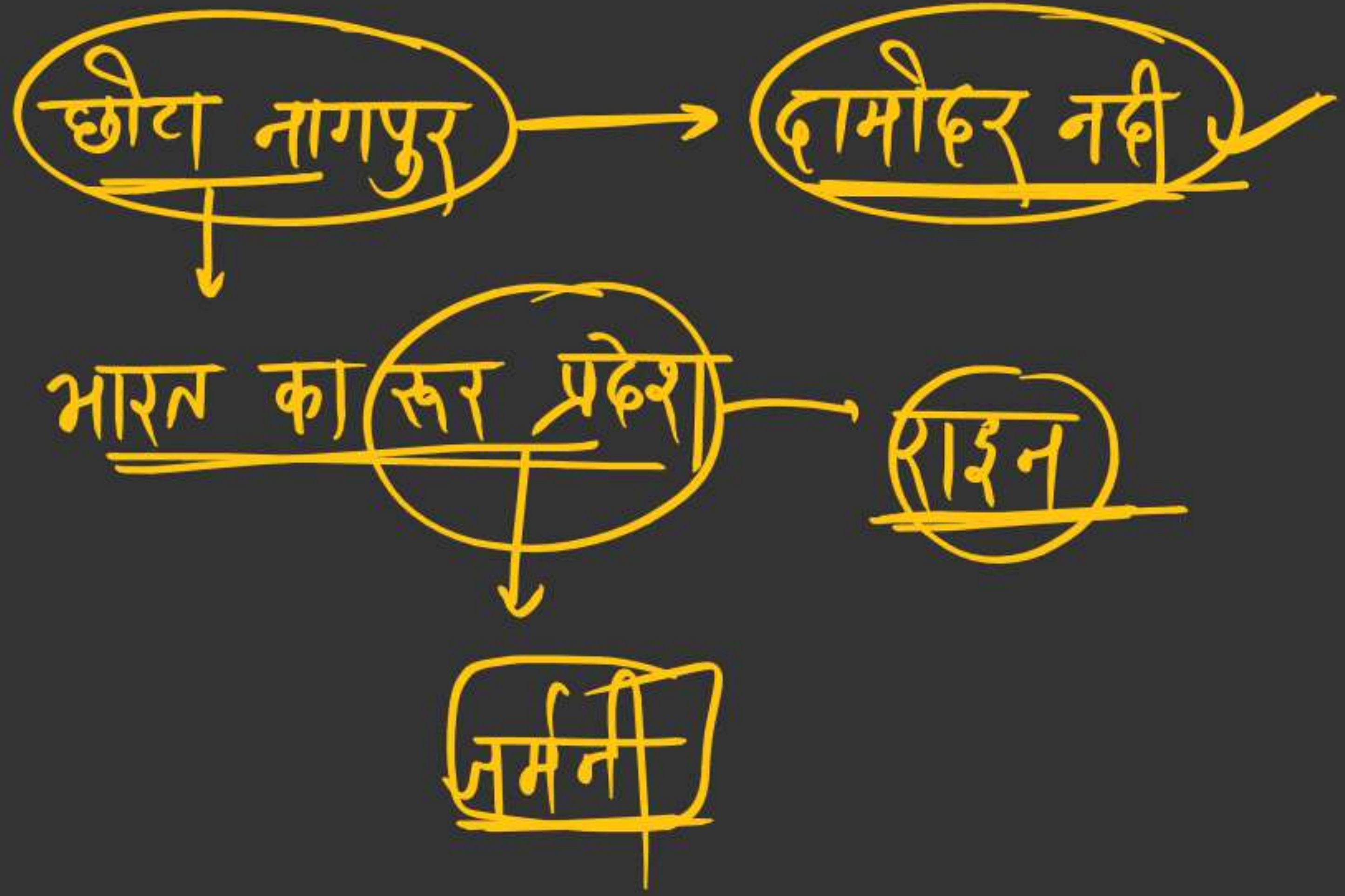
छोटा नागपुर
दामोदर नदी
भारत का रूर प्रदेश
राइन
जर्मनी

⑤ छोटानागपुर का पठार :- मुख्य रूप से झारखंड में विस्तृत भूगर्भिक दृष्टिकोण से काफी विविधता पूर्ण है।

धारवाड, क्रिटेशियस, गोंडवाना आदि कई प्रकार की चट्टानें मिलती हैं।

→ भारत का रूर प्रदेश व खनिज ग्रह कहा जाता है।

रूर प्रदेश → जर्मनी में है।

क्रिटेशियस कालीन लावा जमाव

यहां मेसा व बुटे स्थलाकृतियां मिलती हैं।

✓एक उत्थित भूखंड है जो कि ग्रेनाइट चट्टानों से निर्मित है तथा लैटेराइट निक्षेप पाये जाते हैं।

दामोदर भ्रंश घाटी में गोंडवाना चट्टानों से कोयला की प्राप्ति।

⇒ रांची पठार की औसत ऊंचाई 600 मी तथा हजारीबाग की औसत ऊंचाई 300 मीटर है।

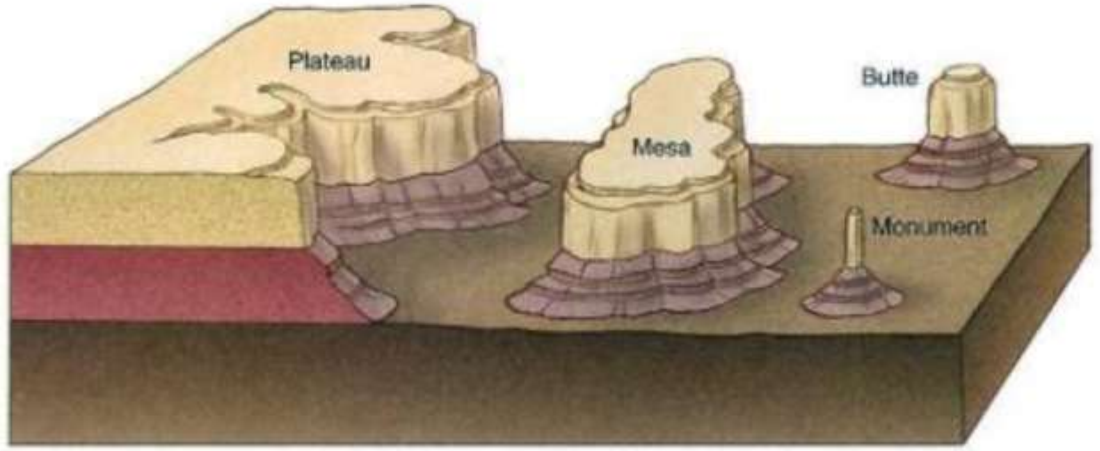

FIGURE 12.3
Characteristic erosional landforms in arid or semiarid areas with horizontal rock layers. Retreat of a plateau leaves mesas, buttes, and monuments as remnants.

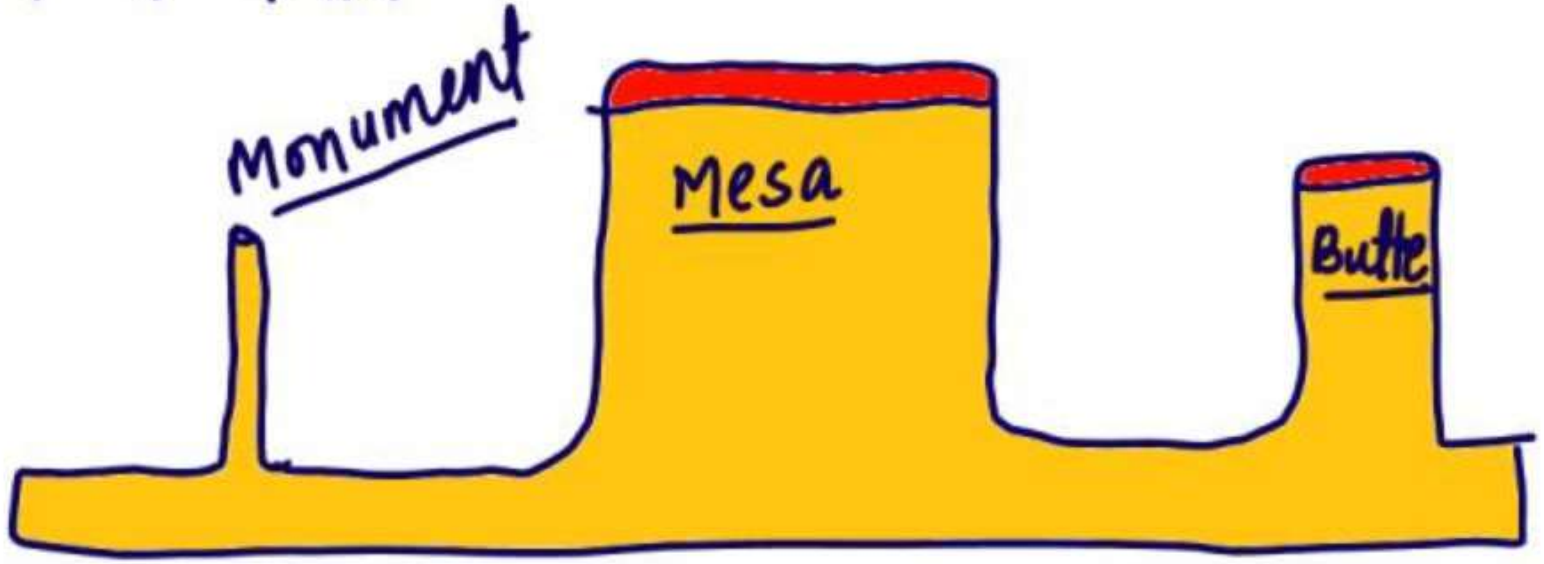

सर्वोच्च चोटी = पारसनाथ (23वें जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ से संबंधित)
↓ (1365 मी)
↓ सम्मेद शिखर भी कहा जाता है।

एडवर्ड स्वेस